मैथिली
B.A. PART – II
SUBSIDIARY

प्रश्न — अश्रुकणा मे कौन कथा अहाँके सबसँ नीक लगैत अछि विवेचन करु ?

उत्तर :- मैथिलीक कथाकार मनमोहन झाक कथाकारक महत्व बड़ पैघ स्थान अछि। मैथिलीमे छोटका कथा लिखबामे मनमोहन झा सर्वाधिक लोकप्रिय छथि। एहि कथा संग्रह मे कथाकार सात गोट कथाक विवेचन कयल अछि। एहि समाज मे अनेकानेक लोकरहैत छथि जकर मनोवृत्ति सभक सब रंगक अछि। कोनो पाठकके आलोचकके राम-गिरि यात्रा, ककरो आशा शीर्षक कथा नीक लगैत अछि। मुदा हमरा एहि कथा मे चन्द्रहार शीर्षक कथा सब तरहेँ उत्कृष्ट उत्कृष्ट अछि। एहि कथा मे कथाकार सीमान्त प्रदेश निवासी सुलेमानक नि:स्वार्थ प्रेमक कथा वर्णित कयने छथि। सर्वोत्तम प्रेम समर्पणक भावक नि:स्वार्थ प्रेमक बीज होयत अछि। कबीरदास, सुरदास आदि नि:स्वार्थ प्रेमक भावके मानैत छथि। सुलेमान हब साल गाँव घराते अबि सोनाक पानि चाँदीक

मुदा सरकार द्वारा कयल जाय हमर
मलिकाइनि तें हालत तक
वाक्य समाप्त भेला सँ पूर्वहि सुरेन्द्र
कहलथिन्ह ओ तें हमर कन्या किछुए
शुभमास तें एकरा जन्मकाल में किछु
लोक चलि गेलैक
तावत प्रातः काल सुलेमान
आपन देश जायके लेल तैयार भऽ
गेल विदा सँ पूर्व पार्वती के देखवाक
[illegible] जिज्ञासा कयलक बड़ीकाल धरि
निर्निमेष दृष्टि देखिकय सोनाक
चन्द्रहार ओकरा हाथ में दय
मांगि के ओ सुरेन्द्र बाबूक कहलनु
चन्द्रहार एहि हेतु नहि आनलहुं अछि
जे ओकर [illegible] चाँदीक चन्द्रहारक
तिरस्कार कयने छलीह जावत ओ कुमारी
छलीह तावतहि चन्द्रहार पहिरबाक इच्छा
छल। ई सुनि सुरेन्द्र बाबूक वाणी अवरुद्ध
भऽ गेल [illegible] सुलेमान आपन जाकऽ पार्टी
लगा पहाड़ कारि-कारि सोनक वर्ष में [illegible]
बचा सकलहुं जे सोनक चन्द्रहार
दऽ सकी
एहि ठाम देखल छी
एहि कथा में विशुद्ध एवं सात्विक प्रेम
आकुल अभिव्यक्ति भेल अछि
ई कथा दैशान्त अछि

प्रश्न:- कृष्णजन्म शीर्षक निबंधक भाव स्पष्ट करु।

उत्तर - मैथिली काव्य - ~~साहित्य~~ साहित्यमे विशिष्ट स्थान छन्हि। विशेषत: कृष्णक काव्यक क्षेत्रमे हुनक विशेष अवदान अछि।

मैथिली मे बाल काव्यक श्री गणेश मनबोध करलन्हि अछि। कृष्णक बालरूपक सरलता एवं मृदुतामे ओ लोकके परिचित करौलन्हि। दोसर विषय ओ नारीक चित्रण पुरुषक भोग्य रूपमे नहि कैलन्हि। हुनक सौं पूर्ववर्ती कवि सभ ओकर नारीक रूप माधुरी एवं शृंगारक वर्णन धरि सीमित नहि रहलन्हि। नारीत्वक चरमसीमा ~~विकास~~ विकास मातृत्व मे होयत छल।

मातृत्व रूप मे प्रथमहि नारीक चित्रण सर्वप्रथम मनबोध कएने छथि। माताक रूप मे नारीक वात्सल्यपूर्ण हृदयक मनबोध बड़ सफलता प्राप्त छल। कृष्णक प्रति कड यशोदाक हृदयमे भाव उठलन्हि प्रसंगमे जसोमति के बेलन विकलता छलन्हि तकर कवि बड़ हृदयग्राही वर्णन कएने छथि। ताहि सँ हुनक विलक्षण काव्य प्रतिभाक परिचय प्राप्त होयत अछि। कृष्ण कखनहुँ आँगनमे घुमय चाहैत छथि कखनहुँ साँप पकड़ चाहैत छथि कखनहुँ ~~चु~~ चुनक देखि कुदि वा जायत छथि कृष्णक ~~बाल~~ बाल क्रीड़ाक अद्भुत वर्णन

हमर नाम छिक अयाची मिश्र। आइ धरि एहि जीवनमे ककरो सँ किछु याचना नहि कएल साहि वस्त्र एहि तरहें निमाहि लेल। तहि बादक दिनक लेल एहि संकल्प संग जियैक करि

हुनक पुत्र सँ ~~[illegible]~~ महाराज हुनक विद्वता पर मोहित भय रत्नमाला भेंट करैत छथि। तावत ओहि युवकसँ पुत्रक पहिल कमाइ चमैनके निछावर देबाक ख्याल मे ~~रख~~ आएला पर ओ महत्व ताहि रत्नमाला चमैन के सौंप दैत छथि। अयाची मिश्र अद्भुत प्रतिभाशाली स्वावलम्बी छलाह अतिथि हुनका ओ ब्राह्मण हुनका होइ पर आबि भक्तिपूर्वक हाथ जोड़ि वन्दना करैत छथि —

प्रकाण्ड अयाची मिश्र फेरि
आन शंकरा के एक बेरि
ओहि ठाँ पुनि होथि भवानीमा
आदर्श मेल जनिकर जीवन

प्रश्न — आयाची मिश्रक चारित्रिक विशेषताक उल्लेख करू
अयाची मिश्रक चारित्रिक विशेषता ?

उत्तर :- प्रस्तुत एकांकी नाटकमे आयाचीक प्रथम परिचय एक पुजारीक रूपमे होइत अछि। हुनक सामने धूप, दीप, नैवेद्य, पुष्प सभा दि पात्र ~~[illegible]~~ धयरा आदि राखल छनि, अपन अर्द्धांगिनी भवानीकेँ दावतहि जिज्ञासा जरल प्रश्न करैत छथि। प्रभु सँ नैवेद्य हेतु राखल अक्षत सेहो घरा देवक बात सूनि कहैत छथि —

घरक आंगना सेहो राखि लेल —
गृहिणीकेँ एहने होमक चाही

आयाची मात्र सेवा करैत छथि। भवानी केँ अपना करऽ अपन परिवारक भरण-पोषण आ अतिथि लोकनिक सत्कार करैत छलाह। आयाची एक स्वावलम्बी छलाह। धरती जे फसिल आ साग उपजैत छलनि ओहि सँ निर्वाह करैत छलाह मुदा ककरहु समीप हाथ पसारबाक भावना कहियो हुनका मन - मस्तिष्कमे नहि आबैत छल।

अपन विचार आ कृति केँ व्यक्त करैत छथि — आनक संचित कएल धन द्वारा लोकनि अपन काजमे लगावी ठीक नहि। हुनक पुत्र सँ मिथिलेश सेहो दर्शन करबा लेल आबैत छथि। महाराज कतेक बेर मँगबाक आग्रह करैत छथि मुदा ओ एतबहि कहैत छथि

Scanned with CamScanner

अछि — कतोएक दिवस जावन बीति गेल
छरि बुनि हथगर नाँदनार गेल।
जे कौन काम जकर नहि जानैछि
कए बेरि आँगन सँ छोटराछि
कए बेर सोंप खवाए बुनि जानैछि
कए बेर चुन पहिलबाहि खाहि।

NOKIA

Scanned with CamScanner

जेवर पर चानीक आकर्षक गहना छेपि
मन मे कामना रहैत छल जे सुन्दर
युवती सं शादी कए अपन पत्नी
बनाबी गहना छेपि अपन देश घुरि
आयत छल। ओकर ईश गामक
जमीन्दारक ओतय छलैक हुनक बालक
सं मैत्री कए व्यक्तिगत मित्र छला
एक मैथिलीक लागल
जकर सुन्दर छुटैक सुरम जकां प्रफुल्लित
छलैक तकरा पर ओ रीझि गेल
किशोरावस्था मे छलि युवती के अपन
प्रेमिकाक रूप मे देखैत छलाह। एहि
प्रयास मे लागल छल जे कोना जे
एहि कन्याक अपहरण कए ली
हुनक मित्र सुरेन्द्र बाबू जखन एहि
रहस्य के जानलन्हि तखन अपन
समाजके नेतृत्वक अपमान करनिहार
सुलेमानक ओ पूर्ण रूपें विरोध कयलन्हि
संयोग एहि घटनाक तीन दिनक
बाद ओ अपना देश चल गेलाह
पुनः तीन वर्षक बाद आयल।
ओकरा आवश्यक कोनो टेकान न[illegible]
[illegible] ओ देखलक जे ओकर
प्रेमिका मित्रक पत्नी बनि गेलीह।

ओकरा स्मरण आबि गेल जे कुमारी
अवस्था मे बालिका ओकरा चन्द्रहार क
मांग कयने छलीह संध्याकाल मे
मित्र सुरेन्द्र बाबूक हाथ मे चानीक
चन्द्रहार उपहार स्वरूप में रखलक
आ अपन हृदयक बातके गुप्त राखलक
मुदा सांझ मे हवेलीक स्वामिनी के ओ
चन्द्रहार पहिरने देखि ओकरा आश्चर्य
लागल ओ सोचए लागल जे आइ
ई चन्द्रहार [illegible] चानीक नहि सोना
सोनाक चन्द्रहार रहितैक तँ ओकरा
एहि प्रकारक अपमान नहि होयतैक
ओहि दिन रातुक गाडीसँ हारल जुआरी
जकां अपन देश विदा भऽ गेल
एहि घटनाक अठारह
वर्ष बाद सुलेमान पुनः देहात
आयल। स्वामिनी मित्र सुरेन्द्र बाबूक ओ
कहलक जे अपहरण कए के हमहुं विवाह कयलहुँ
किन्तु मौन रहि गेल बाजल बाबू स्वरूप
अद्भुत बात अहि देखबा अछि। सोलह
वर्ष हम विवाह कयल गेल अछि। आइ
कालिह हमर दीनक अवस्था चालीसक
चिंतक स्तर मे ओकर सौन्दर्य पहिल
दिन देखल रहैक तहि मे आकाश
पातालक अन्तर भऽ गेल अछि। सुन्दर
आबनुइ अछि मुदा कुम्हलायल गुलाब
सन।